रीति कालीन जैन कवि और उनका काव्य

✧ डॉ. राजेश अनुपम

जैन कवियों ने प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं के साहित्य के समान हिन्दी साहित्य कोष को समृद्ध करने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है और उनके द्वारा रचित एक विशाल जैन-हिन्दी साहित्य आज उपलब्ध है। यह अवश्य है कि वर्तमान हिन्दी साहित्य के अध्ययन और शोध की ओर बहुत कम ध्यान दिया गया है और जैन समाज ने भी विगत कुछ दशकों तक इस दिशा में घोर उपेक्षा दिखलाई है, फिर भी जैन हिन्दी साहित्य की महत्ता और अपरिमेयता के सम्बन्ध में दो मत नहीं हो सकते।

यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि जिस रीति काल में अधिकांश कवियों का मानस उद्याम शृंगार वर्णन की ओर प्रवृत्त था, वहीं जैन कवियों ने इस परम्परा को घोर अमंगलकर समझा और मुख्यत: आध्यात्म रस कलित, शांत रस प्रधा साहित्य का ही सृजन किया।

रीति कालीन जैन कवियों में बनारसीदास का नाम शीर्ष पर है। इनका जन्म सन् 1643 को जौनपुर में हुआ था। आप महान् प्रतिभाशाली कवि थे और आध्यात्म के प्रकाण्ड पंडित और व्याख्याता थे। इनकी रचनाओं में नाम माला, नाटक समय-सार, बनारसी विलास और अर्द्ध कथानक ही उपलब्ध है। इनकी प्रथम रचना 'नवरस' थी जो इन्होंने चौदह वर्ष की अवस्था में लिखी थी। यह एक शृंगार रस प्रधान रचना थी, जिसे कवि ने एक हजार दोहा चौपाइयों में समेटा था, परन्तु कहा जाता है कि उन्नीस वर्ष की अवस्था में इस पाण्डुलिपि को उन्होंने अपने ही हाथों गोमती की धारा में प्रवाहित कर दिया था।[1]

'नाटक समय सार' बनारसी दास की प्रसिद्ध आध्यात्मिक रचना है। यद्यपि इसका प्रणयन आचार्य कुन्द-कुन्द की 'समय प्रामृत' के आधार पर हुआ है तथापि भाव-भाषा और शैली की दृष्टि से यह एक प्रसन्न प्रतिमा-प्रसून मौलिक रचना जैसी ही प्रतीत होती है। इसमें दोहा, सोरठा, चौपाई, छप्पय, कुण्डलिया, सवैया और कवित्त आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है और काव्यकला की दृष्टि से कवि की यह एक सर्वांग सुन्दर रचना है।

1707 पद्यों में रची इस रचना का जन्म सन् 1693 को हुआ था। यह एक विशुद्ध आध्यात्मिक कृति है। जिसमें आत्म स्वातंत्र्य लाभ के साधकतम स्थल पर स्वानुभव को ही आत्म सिद्धि का द्वार बताते हैं।

भैया जगवासी तु उदासी ह्वै के जगत सौं,
एक छै महीना उपदेश मेरा मानु रे।
और संकल्प विकल्प के विकार तजि?
बैठ कै एकान्त मन एक ठारू आनुरे।।
तेरौ घर सर तामैं तू ही है कमल ताकौ,
तू ही मधुकर ह्वै सुवासु पहिचानु रे।
प्रापति न ह्वै है कछु ऐसा तु विचार तु है,
सही ह्वै प्रापति सरूप यों ही जानु रे।।[2]

एक अन्य स्थान पर वे स्वानुभवी व्यक्ति को साहुकार तथा स्वानुभव-शून्य को चोर बतलाते हैं-

साधी दधि मंथ में अराधी रच-पंथनी मे,
जहाँ-तहाँ ग्रंथनि मै सत्ता ही कौ सोर है।
ग्यान-भान सत्ता में सुधा निधान सत्ता ही में,
सत्ता की दुरनि सांझ सत्ता मुख भोर है।।[3]

अर्द्ध कथानक बनारसीदास की आत्मकथा है, जिसमें उन्होंने अपने 55 वर्षों के वे चित्र्यपूर्ण जीवन-ऐतिहास का अत्यन्त सरस एवं सजीव शैली में गुम्फन किया है। हिन्दी साहित्य का यह सर्वप्रथम महत्त्वपूर्ण आत्मकथात्मक ग्रन्थ है। इसकी भूमिका में स्वयं बनारसीदास ने लिखा है-'सत्य प्रियता, स्पष्टवादिता, निराभिमानता और स्वाभाविकता का ऐसा जबर्दस्त पुट इसमें विद्यमान है, भाषा इस पुस्तक की इतनी सरस है और साथ ही वह इतनी स्पष्ट भी है कि साहित्य का चिरस्थाई सम्पत्ति में इसकी गणना अवश्यमेव होगी।'[4]

अर्द्ध कथानक के उपसंहार में कविवर ने एक मुक्त भोगी की करुण अनुभूति के साथ आत्म-बोध का जो सजीव चित्र अंकित किया है उसने तो वस्तुत: इस रचना को आध्यात्मिक रचना में ही पर्यनसित कर दिया है, जैसे-

नौ बालक हुए मुए, नरे नारि-नर दोइ।
ज्यों तरवर पतझर ह्वै, रहे ठूंठ से होई।।
तत्व दृष्टि जो देखिए, सत्यारथ को भांति।
ज्यों जाकौं परिग्रह घटै, त्यों ताको उपसांति।।
संसारी जाने नहीं, सत्यारथ की बात।
परिग्रह सौं मानै विभौ, परिग्रह बिन उत्पात।।[5]

'बनारसी विलास' कवि की 57 छोटी-बड़ी रचनाओं का संग्रह है, इसका सम्पादन सन् 1701 में पं. जगजीवन ने किया था।

रीति कालीन जैन कवियों में भूधरदास का नाम भी उल्लेखित है। यह आगरा निवासी आध्यात्म रसिक सुकवि थे। इनका रचना काल अठारहवीं शती के अन्त में माना जाता है। इन्होंने जैन शतक पार्श्व पुराण तथा पद संग्रह नाम की तीन महत्त्वपूर्ण रचनाओं का प्रणयन किया था।

प्राध्यापक-हिन्दी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय-चिमनपुरा (जयपुर)

जैन शतक की रचना वि.सं. 1781 पौष कृष्णा त्र्योदशी को लिख कर समाप्त की गई, जिसे शाह हरिसिंह के धर्मानुसंगी वंशजों की प्रेरणा से लिखा गया। इसमें कवि ने आध्यात्म, नीति एवं भक्ति की जो त्रिवेणी प्रवाहित की है, उसमें अवगहन करके प्रत्येक सहृदय आत्म-प्रबुद्ध हो सकता है, संसारी मानव की प्रगाढ़ रागान्धत्मक कवि-कल्पना-प्रस्तुत एक चित्र देखिए-

देखौ जौवन में पुत्र को वियोग आयो,
तैसों, ही निहारी निज नारी काल मग में।
जै जै पुन्यवान जीव दीखत है या मही पै?
रंक भए फिरैं ते ह्वै पनही न पग में।।
एते पै अभाग धन दौलत सौं धरे राग?
होय न विराग जानै रहुंगो अलग में।
अंखिन विलोक अंध सूसे की अंधेरी करे,
ऐसे राज रोग को इलाज कहा जग में।।[6]

भूधरदास की दूसरी रचना पार्श्व पुराण है, जिसमें तेइसवें जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ की जीवन गाथा का कवित्व पूर्ण शैली में गुम्फन किया गया है। प्रसाद गुण युक्त रचना अनुपम बन पड़ी है। रीति कालीन अन्य जैन कवियों में भैया भगवतीदास, दौलतराम, धनपतराम, आनन्दधन, विजय, विजय-विजय, भागचन्द, वृन्दावन एवं बुधजन की रचनाएँ उच्च कोटि की हैं।

18वीं शताब्दी के भैया भगवतीदास जी आगरा के निवासी थे। 'भैया' इनका उपनाम था। इनकी छोटी-मोटी 67 रचनाओं का संग्रह 'ब्रह्म विलास' में हुआ है। इनमें सिद्धान्त, आध्यात्म, नीति एवं वैराग्य की बहुत ऊँची और गम्भीर अभिव्यंजना हुई है।

इनका एक आध्यात्मिक पद देखिए और देखिए कि उसमें किस प्रकार अपूर्व स्वानुभव उद्वेलित हो रहा है-

कहा परदेशी को पतियारो,
मन मानै तब चलै पंथ को सांझ गिनै न सकारो।
सबै कुटुम्ब छोड़ि इतनी मुनि, त्याग चलै तन प्यारो।।
दूर दिसावर चलत आप ही, कोउन राखन हारो।
कोऊ प्रीति करौ किन कोटिक, अन्त होयगो न्यारो।।
धन सौं रात्रि धरम सौं भूतल, झूलत मोह मंझारो।
इक विधि काल अनन्त गमायौ, पायौ नहीं अब पारो।।
सांचे सुख सौं विमुख होत है, भ्रम मदिरा मतवारौ।
भेतहु चेत सुवहु रे 'भैया' आप ही आप संभारो।।[7]

रीति कालीन जैन कवियों के कला का यह नमूना मात्र है। रीति काल के शृंगरावग्राही लोक मानस को इन कवियों ने जिस सात्विक काव्यधारा की ओर उन्मुख किया था, रीति काल के अविकल स्वरूप को समझने के लिए आज का हिन्दी साहित्यकार उसकी कथमाषि उपेक्षा नहीं कर सकता।

संदर्भ-

1. अर्द्धकथानक (हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, मुम्बई) 246-271 : बनारसीदास
2. नाटक समयसार : 2-3 : बनारसीदास
3. नाटक समयसार : 9-23 : बनारसीदास
4. अर्द्धकथानक की भूमिका : बनारसीदास
5. वही
6. जैनशतक : भूधरदास
7. पार्श्व पुराण